ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department of-History-Subsidiary
12-05-2020 B.A.I [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang [Notes]

आक्रमण के कारण [Caues of Invasin]:

ईरानी आक्रमण के बाद भारत पर यूनानियों का आक्रमण हुआ। यह आक्रमण चौथी शताब्दी ई० पू० में सिकन्दर के आक्रमण का एक कारण माना जाता है। सम्पूर्ण यूनान पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के बाद सिकन्दर ने एशिया और अफ्रिका के बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लिया था।

मिस्र और ईरान जैसे शक्तिशाली राज्य भी उसके आक्रमणों से नष्ट हो चुके थे। इस सफलता से उसकी विजय-लिप्सा और भी बलवती हो गयी थी। हखामनी साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने के बाद सिकन्दर भारत के काफी निकट आ चुका था। वह भारत पर भी अधिकार करना चाहता था।

भारत पर आक्रमण करने के पीछे सिकन्दर का आर्थिक स्वार्थ भी था। उस समय भारत अपनी आर्थिक सम्पन्नता के लिए विख्यात था। सिकन्दर ईरानियों से भारत की आर्थिक सम्पन्नता के बारे में

सुन चुका था। अतएव उसके मन में धन प्राप्त करने की लालसा भी उमड़ पड़ी।

नए भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा भी सिकंदर को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित की थी। वह नये प्रदेशों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना चाहता था। स्काईलैक्स के अन्वेषण से वह काफी प्रभावित था और इसे वह और आगे बढ़ाना चाहता था। सिकन्दर अपने पूर्व विजेताओं से भी प्रभावित था उसने देखा कि डारा आदि ईरानी सम्राटों ने भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर निर्विरोध विजय प्राप्त कर ली थी। वह सम्पूर्ण भारत पर अधिकार करके विश्व-विजेता के रूप में अपना नाम अमर करना चाहता था। भारत पर सिकन्दर के आक्रमण का एक और कारण था। उस समय आम्भी तक्षशिला का शासक था और पोरस के बीच मतभेद था। पोरस की बढ़ती शक्ति से आम्भी भयभीत हो गया था। आम्भी ने पोरस के प्रभाव को रोकने के लिए सिकंदर से सहायता की याचना की। उसने सिकन्दर के पास भारत पर आक्रमण करने के लिए निमंत्रण भेजा और पोरस की बढ़ती हुई शक्ति को

कर चलने का अनुरोध किया। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का खोखलापन और भारतीय शासकों का आपसी फूट स्पष्ट हो चुका था। इससे भी सिकन्दर भारत-विजय के लिए लालायित हो उठा।

आक्रमण का स्वरूप [Nature of Invasion]:

चौथी शताब्दी ई० पू० में मकदुनिया के राजा सिकन्दर ने ईरानी राजा दारा तृतीय को पराजित कर भारत पर आक्रमण किया। इस अभियान का उल्लेख हमें यूनानी इतिहासकारों के वृत्तान्त में मिलता है। 327 ई० पू० के वसन्त में सिकन्दर हिन्दुकुश पर्वत को पार कर जलालाबाद के निकट स्थित निकाइया नामक नगर में पहुंचा।

भारत पर वास्तविक आक्रमण करने से पूर्व सिकन्दर ने अपनी सम्पूर्ण सेना को दो भागों में बाँट दिया। पहला भाग हैफेस्चन [Hephaestion] और पार्डिकस [Perdiccas] नामक वीरों के नेतृत्व में काबुल नदी के दक्षिणी तट होकर खैबर दर्रा सिन्धु की तरफ बढ़ा। सिन्धु के किनारे पहुँचा कर इस सेना को नदी पार करने के लिए आवश्यक तैयारियाँ करनी थी। सेना के दूसरे भाग को सिकन्दर

सिकन्दर स्वयं अपने साथ रखकर काबुल नदी के उत्तरी तट होते हुए आगे बढ़ा। पहाड़ी जातियों को अपने अधीन करते हुए उसे सिन्धु के किनारे पहुँच कर सेना के महले भाग साथ मिल जाना था।

सिन्धुघाटी की तराई में पहुँचने पर सिकन्दर की सेना को पुनः विरोधों का सामना करना पड़ा। कुछ राज्यों ने तो आत्मसमर्पण कर दिया किन्तु इस क्षेत्र के सबसे शक्तिशाली राजा मुशिक ने डटकर मुकाबला किया, किन्तु सिकन्दर की सेना के आगे वह कुछ नहीं कर सका।

पटल पहुँच कर सिकन्दर ने अपनी सेना को तीन भागों में बाँट दिया। पहला भाग कन्धार और सीस्तान होते हुए लौटा। दूसरा भाग फारस की खाड़ी होते हुए निमार्कस के नेतृत्व में वापस हुआ। बाकी सेना के साथ बेलोचिस्तान और ईरान के रास्ते वह स्वयं चला। 323 ई० पू० में बेबिलोनिया पहुँचने पर उसकी मृत्यु हो गई।

सिकन्दर के आक्रमण के परिणाम

सिकन्दर के आक्रमण का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह भी हुआ कि उसने

उत्तर-पश्चिमी राज्यों की दुर्बलता को स्पष्ट कर दिया। अब भारतीय महसूस करने लगे कि सुदृढ़ राजनीतिक संगठन के अभाव में विदेशियों के आक्रमण का खतरा हमेशा रहेगा।

अतः उनमें राजनीतिक एकता की भावना जगी। भारतीयों को अपनी सैनिक दुर्बलता का भी पता चला गया और भविष्य में इसे सुधारने का प्रयास किया गया। सिकन्दर के आक्रमण ने भौगोलिक खोजों को भी प्रोत्साहन दिया। निआर्कस ने सिन्धु नदी के मुहाने से लेकर फुरात नदी के मुहाने तक के जलमार्गों एवं बन्दरगाहों का पता लगाया। इस आक्रमण से वाणिज्य-व्यापार को भी प्रोत्साहन मिला। भारत और यूनान के बीच स्थल जल-मार्ग और तीन स्थल-मार्गों का पता लगाया गया था। इन मार्गों द्वारा दोनों देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ा। सम्भवतः भारतीय मुद्रा-प्रणाली [उत्तर-पश्चिमक्षेत्र की] इस व्यापारिक सम्पर्क से प्रभावित हुई थी।

फिर भी इतना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि सिकन्दर का आक्रमण कोई महत्वहीन या साधारण घटना नहीं थी। इसके परिणाम काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।